Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed

Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 4 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के महाविद्यालयों में सूचना सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन

शोध–निर्देषक

डॉ. संगीता आमटे

सह–प्राध्यापक, पुस्तकालय वं सूचना विज्ञान
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म. प्र.)

शोधार्थी

दशरथ सतीलांजेवार

पुस्तकालय वं सूचना विज्ञान
रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

सारांश

आज की तेजी से विकसित होती डिजिटल दुनिया में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) तक पहुँच शैक्षिक अनुभव का अभिन्न अंग है। कंप्यूटर लैब इंटरनेट एक्सेस डिजिटल शिक्षण संसाधन और पुस्तकालय ऑटोमेशन जैसी सूचना सुविधाओं ने छात्रों के सीखने और शैक्षिक सामग्री के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है।

शिक्षा की गुणवत्ता अब केवल पाठ्यपुस्तकों और पारंपरिक शिक्षण विधियों पर ही निर्भर नहीं है बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि छात्र अपने शिक्षण अनुभव को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल उपकरणों का कितना बेहतर उपयोग कर सकते हैं।

महाविद्यालयों चाहे शहरी हों या ग्रामीण को इन बदलावों के अनुकूल होना होगा और छात्रों को डिजिटल युग में शैक्षणिक रूप से सफल होने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने होंगे। सिवनी जिला शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के अपने अनूठे मिश्रण के साथ अपने महाविद्यालयोंमें सूचना सुविधाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में असमानताओं का सामना करता है।

प्रस्तावना

सिवनी के शहरी महाविद्यालयों में आमतौर पर संसाधनों तक बेहतर पहुँच होती है जबकि ग्रामीण महाविद्यालय अक्सर अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और डिजिटल उपकरणों तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियों से जूझते हैं। यह अध्याय सिवनी के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में उपलब्ध सूचना सुविधाओं का पता लगाने और उनकी तुलना करने का प्रयास करता है।

बुनियादी ढाँचे उपयोग के पैटर्न और इन महाविद्यालयों के सामने आने वाली चुनौतियों में अंतर की जाँच करके इस अध्ययन का उद्देश्य जिले में शिक्षा में मौजूद तकनीकी विभाजन पर प्रकाश डालना है। इसके अलावा यह इस अंतर को पाटने और शहरी व ग्रामीण दोनों महाविद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के तरीके सुझाएगा। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन शैक्षिक समानता के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है। जहाँ शहरी महाविद्यालय आमतौर पर कंप्यूटर लैब हाई-स्पीड इंटरनेट और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तक पहुँच से बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं वहीं ग्रामीण महाविद्यालय अक्सर बुनियादी आईसीटी अवसंरचना के लिए संघर्ष करते हैं।

संसाधनों में यह अंतर एक असमान शिक्षण अनुभव में योगदान देता है क्योंकि ग्रामीण महाविद्यालयोंके छात्रों को आधुनिक शैक्षिक उपकरणों से जुड़ने के समान अवसर नहीं मिल पाते हैं। इन असमानताओं को समझना पूरे जिले में शैक्षिक परिणामों में सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण है और यह सुनिश्चित करना है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के छात्रों की डिजिटल संसाधनों तक समान पहुँच हो जो आज की ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में सफलता के लिए आवश्यक हैं।

महाविद्यालयों में सूचना सुविधाएँ अब वैकल्पिक नहीं बल्कि शैक्षिक प्रक्रिया का एक अनिवार्य घटक बन गई हैं। प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने डिजिटल साक्षरता को छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल बना दिया है और यह अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक छात्र चाहे वह किसी भी स्थान या आर्थिक पृष्ठभूमि का हो उन उपकरणों और संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करे जो उसे सफल होने में सक्षम बनाते हैं। ऑनलाइन पत्रिकाएँ ई-पुस्तकें शोध डेटाबेस और इंटरैक्टिव शिक्षण प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल संसाधन शिक्षा को अधिक सुलभ लचीला और इंटरैक्टिव बनाकर उसकी गुणवत्ता में सुधार करते हैं। ये संसाधन छात्रों को पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों से परे व्यापक जानकारी तक पहुँचने की क्षमता प्रदान करते हैं जिससे स्वतंत्र शिक्षण और आलोचनात्मक चिंतन कौशल को बढ़ावा मिलता है।

इसके अलावा डिजिटल उपकरण छात्रों को अधिक कुशलता से शोध करने साथियों के साथ सहयोग करने और अपने अध्ययन के क्षेत्रों में नवीनतम विकास से अपडेट रहने में सक्षम बनाते हैं। कंप्यूटर और इंटरनेट तक पहुँच छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है खासकर आज के शैक्षणिक परिवेश में जहाँ असाइनमेंट प्रोजेक्ट और शोध तेजी से ऑनलाइन किए जा रहे हैं। जिन छात्रों के पास सुव्यवस्थित कंप्यूटर लैब और हाई-स्पीड इंटरनेट तक पहुँच है वे असाइनमेंट अधिक कुशलता से पूरा कर सकते हैं

डिजिटल पुस्तकालय तक पहुँच सकते हैं और वैश्विक संसाधनों से जुड़ सकते हैं जिससे उनके शैक्षणिक क्षितिज का विस्तार होता है।

हालाँकि ग्रामीण महाविद्यालयों में कंप्यूटर लैब की कमी और खराब इंटरनेट कनेक्टिविटी छात्रों की इन संसाधनों तक पहुँच को गंभीर रूप से सीमित कर देती है। इससे एक असमान शैक्षिक अनुभव पैदा होता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र अपने शहरी समकक्षों के समान स्तर की शैक्षणिक सामग्री और शोध के अवसरों से जुड़ नहीं पाते हैं।

डिजिटल पुस्तकालय आधुनिक शिक्षा की आधारशिला बन गए हैं जिससे छात्रों को बिना किसी पुस्तकालय में जाए पुस्तकों शोध पत्रों और शैक्षणिक पत्रिकाओं के विशाल संग्रह तक पहुँच प्राप्त हो सकती है। डिजिटल पुस्तकालय आसान खोज संसाधनों तक त्वरित पहुँच और किसी भी समय सामग्री तक पहुँचने की सुविधा भी प्रदान करते हैं जिससे शिक्षण अधिक कुशल और लचीला हो जाता है। डिजिटल पुस्तकालय प्रणालियों में निवेश करने वाले महाविद्यालय अपने छात्रों को व्यापक और समसामयिक जानकारी तक पहुँच प्रदान करके प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान करते हैं। हालाँकि ग्रामीण महाविद्यालयों में अक्सर डिजिटल पुस्तकालयों का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढाँचे का अभाव होता है और छात्र पुरानी पुस्तकों और संसाधनों का उपयोग करने तक ही सीमित रहते हैं जो वर्तमान शैक्षणिक रुझानों के अनुरूप नहीं हैं।

डिजिटल पुस्तकालयों के अलावा ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म ने छात्रों के पाठ्यक्रम सामग्री तक पहुँचने और प्रशिक्षकों के साथ बातचीत करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव किया है। मूडल गूगल क्लासरूम और ब्लैकबोर्ड जैसे प्लेटफॉर्म छात्रों को एक इंटरैक्टिव और आकर्षक शिक्षण वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ वे व्याख्यान असाइनमेंट क्विज और ऑनलाइन चर्चाओं तक पहुँच सकते हैं। ये प्लेटफॉर्म शिक्षकों को छात्रों की प्रगति पर नजर रखने और तत्काल प्रतिक्रिया देने की सुविधा भी देते हैं जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्र अपनी शिक्षा के साथ आगे बढ़ते रहें। दुर्भाग्य से कई ग्रामीण महाविद्यालयोंमें ऐसे प्लेटफॉर्म का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढाँचे का अभाव है जिससे छात्रों को इन आधुनिक उपकरणों का लाभ उठाने में बाधा आ रही है।

ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म सिवनी जैसे जिले में विशेष रूप से लाभदायक हैं जहाँ छात्रों को कक्षाओं में भाग लेने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ सकती है या जहाँ परिवहन के विकल्प सीमित हैं।

पाठ्यक्रम में इन डिजिटल संसाधनों का एकीकरण न केवल शैक्षिक अनुभव को बढ़ाता है बल्कि छात्रों को डिजिटल दुनिया में फलने-फूलने के लिए आवश्यक कौशल भी प्रदान करता है। तेजी से वैश्वीकृत होती अर्थव्यवस्था में डिजिटल साक्षरता केवल एक पूरक कौशल नहीं है-यह एक मूलभूत आवश्यकता है। जो छात्र डिजिटल उपकरणों के उपयोग में कुशल होते हैं वे कार्यबल के लिए बेहतर रूप से तैयार होते हैं और उनके शैक्षणिक और व्यावसायिक करियर में सफल होने की संभावना अधिक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए इन संसाधनों तक पहुँच और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ये उन्हें सफलता की राह में आने वाली भौगोलिक और आर्थिक बाधाओं को दूर करने के साधन प्रदान कर सकते हैं। इसके अलावा सूचना सुविधाओं की भूमिका केवल छात्र सीखने तक ही सीमित नहीं है। डिजिटल उपकरणों तक पहुँच से प्रशिक्षकों को भी बहुत लाभ होता है।

सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षकों को विषय-वस्तु को अधिक संवादात्मक रूप से प्रस्तुत करने छात्रों की प्रगति को अधिक प्रभावी ढंग से ट्रैक करने और विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्रों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाकर शिक्षण में सहायता करती है। शिक्षक अन्य संस्थानों के सहयोगियों के साथ भी सहयोग कर सकते हैं ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं और अपनी शिक्षण विधियों को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। इसलिए किसी महाविद्यालय में सूचना सुविधाओं की गुणवत्ता न केवल छात्रों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की उनकी क्षमता को सीधे प्रभावित करती है।

महाविद्यालयों में सूचना सुविधाओं के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। डिजिटल संसाधन और उपकरण छात्रों को शैक्षणिक और व्यावसायिक रूप से सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने के लिए आवश्यक हैं। कंप्यूटर इंटरनेट डिजिटल पुस्तकालय और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तक पहुँच सीखने के अनुभव को और अधिक सुलभ कुशल और आकर्षक बनाकर बेहतर बनाती है। मजबूत सूचना सुविधाओं वाले महाविद्यालय एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ छात्र और शिक्षक दोनों ही आधुनिक शैक्षिक सामग्री के साथ जुड़ सकते हैं। हालाँकि इन सुविधाओं तक पहुँच के मामले में शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों के बीच असमानता एक असमान शैक्षिक परिदृश्य का निर्माण

करती है जिसका समाधान यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि सभी छात्रों को आज की डिजिटल दुनिया में सफल होने का अवसर मिले।

महाविद्यालयों में सूचना सुविधाओं का महत्व-

समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में सूचना सुविधाओं की उपलब्धता और उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए आवश्यक हो गया है। ये सुविधाएँ जिनमें कंप्यूटर लैब इंटरनेट एक्सेस ई-बुक्स डिजिटल पुस्तकालय और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे विभिन्न डिजिटल संसाधन शामिल हैं सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के विकास ने अधिक संवादात्मक लचीले और सुलभ शिक्षण अवसर प्रदान करने के लिए तकनीकी एकीकरण पर अधिकाधिक निर्भरता दिखाई है। शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका अब केवल पूरक ही नहीं बल्कि शैक्षणिक सफलता और समग्र संस्थागत प्रभावशीलता के लिए मौलिक भी है।

ऐसे युग में जहाँ जानकारी लगभग हर किसी की उंगलियों पर है सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाने वाले महाविद्यालय एक ऐसा वातावरण तैयार करते हैं जहाँ छात्र विशाल संसाधनों तक पहुँच सकते हैं सार्थक शोध में संलग्न हो सकते हैं और महत्वपूर्ण डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित कर सकते हैं। ऑनलाइन पत्रिकाओं ई-पुस्तकों और शैक्षिक वेबसाइटों जैसे डिजिटल संसाधनों तक पहुँच छात्रों को अपनी शिक्षा पर नियंत्रण रखने विषयों का अधिक गहराई से अन्वेषण करने और नवीनतम शैक्षणिक शोध और रुझानों से अवगत रहने में सक्षम बनाती है।

ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा की ओर बदलाव ने शैक्षणिक सामग्री के वितरण के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है जिससे यह अधिक गतिशील लचीला और छात्र-केंद्रित हो गया है। छात्रों को इन सुविधाओं तक पहुँच प्रदान करने के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता क्योंकि यह न केवल शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देता है बल्कि छात्रों को आज की डिजिटल दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक कौशल भी प्रदान करता है।

इसके अलावा सूचना प्रौद्योगिकी का महाविद्यालयों के प्रशासनिक कार्यों शोध और संचार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। आज के तेज-तर्रार शैक्षणिक परिवेश में प्रशासक शिक्षक और छात्र पाठ्यक्रम असाइनमेंट ग्रेडिंग और शेड्यूलिंग के प्रबंधन के लिए सुव्यवस्थित प्रणालियों से लाभान्वित होते हैं।

Volume 3 | Issue 4 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएम) ईमेल और वर्चुअल क्लासरूम जैसे डिजिटल उपकरण शिक्षकों और छात्रों के बीच सहज संचार को सुगम बनाते हैं। संचार की यह सहजता न केवल छात्रों की सहभागिता को बढ़ाती है बल्कि सहयोगात्मक शिक्षण को भी बढ़ावा देती है।

सुस्थापित सूचना सुविधाओं वाले महाविद्यालय आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं की जटिलताओं को संभालने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं और अपने छात्रों को अधिक व्यापक शैक्षिक अनुभव प्रदान करते हैं।

डिजिटल पुस्तकालय: सूचना तक पहुँच का विस्तार-

आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों की आधारशिलाओं में से एक डिजिटल पुस्तकालय प्रणाली है। डिजिटल पुस्तकालय छात्रों को भौतिक स्थान की कमी या पारंपरिक मुद्रित सामग्री की सीमाओं के बिना संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच प्रदान करते हैं। एक डिजिटल पुस्तकालय में छात्र ई-पुस्तकें शैक्षणिक पत्रिकाएँ शोध पत्र और अन्य मल्टीमीडिया सामग्री तक पहुँच सकते हैं। ये संसाधन अक्सर 24x7 उपलब्ध होते हैं जिससे छात्रों के लिए स्व-निर्देशित शिक्षण शोध करना और अपनी सुविधानुसार असाइनमेंट पूरा करना आसान हो जाता है।

शोध प्रविधि-

शोध प्रविधि एक आधारभूत तत्व है जो अध्ययन की संरचना और दृष्टिकोण को निर्देशित करता है यह निर्धारित करता है कि डेटा कैसे एकत्र किया जाएगा उसका विश्लेषण किया जाएगा और उसकी व्याख्या की जाएगी। सिवनी जिले के महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं का उपयोग पर इस अध्ययन के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों शोध डिजाइनों को मिलाकर एक मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण चुना गया है। यह दृष्टिकोण उपयुक्त है क्योंकि यह प्रतिभागियों के अनुभवों और धारणाओं से प्राप्त अंतर्दृष्टि के साथ संख्यात्मक डेटा को एकीकृत करके सूचना सुविधा उपयोग की व्यापक समझ की अनुमति देता है।

सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं के उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन पहुंच और प्रभाव पर इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण-आधारित दृष्टिकोण प्राथमिक शोध पद्धति है जिसे गहन अन्वेषण के लिए केस स्टडी तत्व द्वारा पूरक बनाया गया है। इस मिश्रित शोध दृष्टिकोण को सर्वेक्षणों की व्यापक सामान्यता को केस स्टडी द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रासंगिक

गहराई के साथ संतुलित करने के लिए चुना गया है जिससे डेटा संग्रह में प्रमाणीकरण सुनिश्चित होती है।

नमूना आकार निर्धारण-

किसी भी शोध अध्ययन में नमूना चयन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है जिससे शोधकर्ता अपने अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार सही डेटा एकत्रित कर सकते हैं। इस शोध में सिवनी जिले के अंतर्गत आने वाले 19 महाविद्यालयों से प्रत्येक महाविद्यालय से 30 इस प्रकार कुल 570 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है। सिवनी जिले में स्थित ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के कुल 19 ग्रन्थपालों को चयन किया गया है।

नमूना आकार-

इस अध्ययन में कुल 570 छात्रों का चयन किया गया था जिनमें से प्रत्येक महाविद्यालय से 30 छात्र-छात्राओं को चुना गया था। इस प्रकार नमूना चयन की कुल संख्या 570 थी जिसमें प्रत्येक महाविद्यालय के छात्रों का समान रूप से प्रतिनिधित्व किया गया था।

इसी प्रकार सिवनी जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित कुल 19 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों का चयन किया गया है जो सम्पूर्ण जिले के महाविद्यालयों के पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तालिका 1

शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों में डिजिटल पुस्तकालय सुविधाओं की तुलना

महाविद्यालय का नाम	डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुंच	उपलब्ध संसाधनों के प्रकार	पहुँच घंटे	अद्यतन संसाधन आवृत्ति	शोध डेटाबेस तक छात्रों	अनुसंधान उपकरणों तक	ई-स्तकुंप की उपलब्धता

					की पहुँच	**संकाय की पहुँच**	
शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी	हाँ	ई-पुस्तकें ऑनलाइन पत्रिकाएँ शोध डेटाबेस	7/24	साप्ताहिक	उच्च	उच्च	व्यापक
शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	हाँ	ई-पुस्तकें अकादमिक पत्रिकाएँ रिपोर्टें	7/24	महीने में	मध्यम	मध्यम	व्यापक
शास. विधि महाविद्यालय सिवनी	हाँ	भौतिक पुस्तकें सीमित पत्रिकाएँ	प्रतिबंधित समय सुबह 9) बजे से शाम 4 (बजे तक	दुर्लभ अपडेट	कम	कम	व्यापक
डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	हाँ	सीमित पुस्तकें	प्रतिबंधित समय सुबह 10) बजे से	दुर्लभ अपडेट	बहुत कम	बहुत कम	सीमित

		पुरानी पत्रिकाएँ	शाम 5 (बजे तक				

महाविद्यालय का नाम	**डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुंच**	**उपलब्ध संसाधनों के प्रकार**	**पहुँच घंटे**	**अद्यतन संसाधन आवृत्ति**	**शोध डेटाबेस तक छात्रों की पहुँच**	**अनुसंधान उपकरणों तक संकाय की पहुँच**	**ई-स्तकोंप की उपलब्धता**
निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम सिवनी	हाँ	भौतिक पुस्तकें स्थानीय शोध सामग्री	प्रतिबंधित समय सुबह 9) बजे से दोपहर 3 (बजे तक	कोई नियमित अपडेट नहीं	कम	कम	बहुत सीमित
स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन	हाँ	भौतिक पुस्तकें सीमित पत्रिकाएँ	सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक	वार्षिक	बहुत कम	मध्यम	सीमित

शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी	नहीं	सीमित पुस्तकें	सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक	छमाही	बहुत कम	बहुत कम	बहुत कम
शास. महाविद्यालय छपारा	नहीं	सीमित पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 3 बजे तक	वार्षिक	बहुत कम	बहुत कम	सीमित
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी	हाँ	भौतिक पुस्तकें सीमित पत्रिकाएँ	सुबह 10 बजे से शाम 3 बजे तक	छमाही	बहुत कम	मध्यम	सीमित
शास. महाविद्यालय घंसौर	हाँ	भौतिक पुस्तकें सीमित पत्रिकाएँ	सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक	कोई नियमित अपडेट नहीं	बहुत कम	बहुत कम	बहुत कम
शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी	नहीं	सीमित पत्रिकाएँ पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक	महीने में	बहुत कम	कम	नहीं

विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय खुरसरा	हाँ	सीमित पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक	कोई नियमित अपडेट नहीं	बहुत कम	कम	नहीं
महाजन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय अरंडिया	हाँ	सीमित पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक	महीने में	बहुत कम	मध्यम	सीमित
आदर्श महाविद्यालय पलारी	नहीं	सीमित पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक	कोई नियमित अपडेट नहीं	बहुत कम	कम	कम
अनुराग महाविद्यालय ऑफ एजुकेशन पलारी	नहीं	सीमित पत्रिकाएँ पुस्तकें	सुबह 10 बजे से शाम 3 बजे तक	छमाही	बहुत कम	कम	कम
महाकोशल विज्ञान महाविद्यालय छपारा	नहीं	सीमित पत्रिकाएँ पुस्तकें	सुबह 11 बजे से शाम 3 बजे तक	कोई नियमित अपडेट नहीं	बहुत कम	कम	सीमित

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित

कंप्यूटर लैब और इंटरनेट एक्सेस-

आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में कंप्यूटर लैब और इंटरनेट की पहुँच का महत्व अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है। कंप्यूटर लैब छात्रों को तकनीक से जुड़ने असाइनमेंट पूरा करने शोध करने और डिजिटल साक्षरता कौशल विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। इसके अलावा इंटरनेट की पहुँच छात्रों को शैक्षणिक वेबसाइटों शिक्षण संसाधनों वीडियो और रुचिकर विषयों पर वैश्विक चर्चाओं सहित सूचनाओं की दुनिया तक पहुँचने का अवसर प्रदान करती है।

महाविद्यालय के बुनियादी ढाँचे में कंप्यूटर लैब और विश्वसनीय इंटरनेट पहुँच का एकीकरण छात्रों के सीखने और शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

कंप्यूटर और इंटरनेट तक पहुँच होने से छात्रों को अपने साथियों के साथ सहयोग करने ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री से जुड़ने और गूगल स्कॉलर शैक्षणिक डेटाबेस और शैक्षिक वीडियो जैसे प्लेटफॉर्म तक पहुँचने का अवसर मिलता है जिससे जटिल अवधारणाओं की उनकी समझ बढ़ती है। कंप्यूटर लैब व्यावहारिक शिक्षा के लिए भी एक आवश्यक वातावरण प्रदान करते हैं खासकर कंप्यूटर विज्ञान इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में। छात्र प्रोग्रामिंग कार्यों को पूरा करने विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करने और विभिन्न संसाधनों तक पहुँचने के लिए लैब सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं जो अन्यथा उनके लिए उपलब्ध नहीं होते।

हालाँकि ग्रामीण महाविद्यालयोंमें कंप्यूटर लैब अक्सर संसाधनों की कमी से जूझते हैं जहाँ पुराने उपकरण या तो मौजूद होते हैं या छात्रों के लिए पर्याप्त संख्या में कंप्यूटर नहीं होते।

तालिका 2

शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों में कंप्यूटर लैब और इंटरनेट की उपलब्धता

महाविद्यालय का नाम	कंप्यूटर लैब की उपलब्धता	इंटरनेट एक्सेस गुणवत्ता	प्रयोगशाला उपकरण की स्थिति	छात्र प्रवेश घंटे	प्रति छात्र कंप्यूटरों की संख्या	इंटरनेट की गति	परिसर में वाई-फाई की सुविधा	सीखने के लिए ऑनलाइन सॉफ्टवेयर की उपलब्धता
शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी	5 प्रयोगशालाएँ	उच्च गति इंटरनेट	अद्यतन उपकरण	सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक	प्रति 5 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	100 एमबीपीएस	हाँ	हाँ
शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	3 प्रयोगशालाएँ	वाई-फाई उपलब्ध है	अच्छी तरह से बनाए रखा उपकरण	सुबह 9 बजे से शाम	प्रति 5 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	50 एमबीपीएस	हाँ	हाँ

				7 बजे तक				
शास. विधि महाविद्यालय सिवनी	1 प्रयोगशाला	खराब (बार-बार रुकावट)	पुराने उपकरण	सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक	प्रति 9 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	10 एमबीपीएस	नहीं	नहीं

महाविद्यालय का नाम	**कंप्यूटर लैब की उपलब्धता**	**इंटरनेट एक्सेस गुणवत्ता**	**प्रयोगशाला उपकरण की स्थिति**	**छात्र प्रवेश घंटे**	**प्रति छात्र कंप्यूटरों की संख्या**	**इंटरनेट की गति**	**परिसर में वाई-फाई की सुविधा**	**सीखने के लिए ऑनलाइन सॉफ्टवेयर की उपलब्धता**

डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	2 प्रयोगशालाएँ	अविश्वसनीय/धीमा (कभी-कभार पहुँच)	सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक	सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक	प्रति 6 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	5 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम सिवनी	2 प्रयोगशालाएँ	धीमा/बिखरा हुआ	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक	प्रति 8 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्या	2 प्रयोगशालाएँ	खराब (बार-बार रुकावट)	सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक	11 से 5	प्रति 11 छात्रों पर 1	3 एमबीपीएस	हाँ	हाँ

लय लखनादौन					कंप्यूटर			
शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी	1 प्रयोगशाला	खराब (बार-बार रुकावट)	सुबह 11 बजे से शाम 3 बजे तक	10 से 4	प्रति 28 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
शास. महाविद्यालय छपारा	2 प्रयोगशालाएँ	वाई-फाई उपलब्ध है	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	10 से 4	प्रति 32 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी	2 प्रयोगशालाएँ	खराब (बार-बार रुकावट)	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	11 से 5	प्रति 58 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	हाँ

शास. महाविद्यालय घंसौर	1 प्रयोगशाला	अविश्वसनीय/ धीमा (कभी-कभार पहुँच)	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	11 से 4	प्रति 61 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	एम.बी.पी.एस. का कोई रिकार्ड नहीं	नहीं	नहीं
शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी	1 प्रयोगशाला	कभी-कभार पहुँच	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	10 से 4	प्रति 15 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	एम.बी.पी.एस. का कोई रिकार्ड नहीं	नहीं	नहीं
विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय खुरसरा	2 प्रयोगशालाएँ	अविश्वसनीय/ धीमा (कभी-कभार पहुँच)	सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक	10 से 4	प्रति 27 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
महाजन कला एवं वाणिज्य महाविद्या	1 प्रयोगशाला	वाई-फाई उपलब्ध है	सुबह 10 बजे से शाम	11 से 4	प्रति 5 छात्रों पर 1	3 एमबीपीएस	हाँ	हाँ

लय अरंडिया			4 बजे तक		कंप्यूटर			
आदर्श महाविद्यालय पलारी	1 प्रयोगशाला	खराब (बार-बार रुकावट)	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	11 से 4	प्रति 51 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	3 एमबीपीएस	नहीं	नहीं
अनुराग महाविद्यालय ऑफ एजुकेशन पलारी	2 प्रयोगशालाएँ	वाई-फाई उपलब्ध है	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	11 से 4	प्रति 45 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	एमबी.पी.ए.स. का कोई रिकार्डनहीं	हाँ	नहीं
महाकोशल विज्ञान महाविद्यालय छपारा	2 प्रयोगशालाएँ	अविश्वसनीय/ धीमा (कभी-कभार पहुँच)	सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक	11 से 4	प्रति 35 छात्रों पर 1 कंप्यूटर	एमबी.पी.ए.स. का कोई रिकार्ड नहीं	नहीं	नहीं

तालिका 3

शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों में ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म

महाविद्यालय का नाम	ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म एक्सेस	ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की उपलब्धता	छात्र संलग्नता	प्लेटफार्मों पर संकाय प्रशिक्षण	पाठ्यक्रम के साथ एकीकरण	रिकॉर्ड किए गए व्याख्यानों तक पहुंच	इंटरैक्टिव शिक्षण उपकरण
शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी	मूडल गूगल क्लासरूम	विस्तृत श्रेणी (विज्ञान कला वाणिज्य)	उच्च	संकाय के लिए नियमित कार्यशालाएँ	पूरी तरह से एकीकृत	हाँ	हाँ
शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	गूगल क्लास रूम	मध्यम श्रेणी (अधिकतर कला और वाणिज्य के लिए)	मध्यम	सामयिक प्रशिक्षण सत्र	मध्यम रूप से एकीकृत	कुछ उपलब्ध	हाँ
शास. विधि महाविद्यालय सिवनी	गूगल क्लास रूम	मध्यम श्रेणी (अधिकतर कला और वाणिज्य के लिए)	बहुत कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	कोई एकीकरण नहीं	नहीं	हाँ
डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	गूगल क्लास रूम	मध्यम श्रेणी (अधिकतर कला के लिए)	बहुत कम	सामयिक प्रशिक्षण सत्र	कोई एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं
निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम सिवनी	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	सामयिक प्रशिक्षण सत्र	कोई एकीकरण नहीं	कुछ उपलब्ध	हाँ
स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन	गूगल क्लास रूम	विस्तृत श्रेणी (विज्ञान कला वाणिज्य)	कम	सामयिक प्रशिक्षण सत्र	कोई एकीकरण नहीं	कुछ उपलब्ध	हाँ
शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	कोई एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं
शास. महाविद्यालय	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण	कोई एकीकरण	नहीं	नहीं

छपारा				उपलब्ध नहीं है	नहीं		
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी	गूगल क्लास रूम	कोई नहीं	कम	सामयिक प्रशिक्षण सत्र	कोई एकीकरण नहीं	कुछ उपलब्ध	हाँ
शास. महाविद्यालय घंसौर	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं
शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	नहीं	हाँ
विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय खुरसरा	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	कोई एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं
महाजन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय अरंडिया	गूगल क्लास रूम	मध्यम श्रेणी	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	कुछ उपलब्ध	नहीं
आदर्श महाविद्यालय पलारी	कोई नहीं	कोई नहीं	कम	कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं
अनुराग महाविद्यालय ऑफ एजुकेशन पलारी	कोई नहीं	मध्यम श्रेणी		कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	कुछ उपलब्ध	नहीं
महाकोशल विज्ञान महाविद्यालय छपारा	गूगल क्लास रूम	कोई नहीं		कोई प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है	एकीकरण नहीं	नहीं	नहीं

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित

शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल संसाधनों तक पहुंच-

आज के शैक्षिक परिवेश में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच सीखने की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऑनलाइन जर्नल डेटाबेस शैक्षिक वीडियो और शोध पत्र जैसे विविध शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए आवश्यक हो गई है। इंटरनेट कनेक्शन की गुणवत्ता वाई-फाई की उपलब्धता और महाविद्यालयों द्वारा डिजिटल संसाधनों को अपनाने की सीमा आधुनिक शैक्षणिक परिवेश में शिक्षण और सीखने की प्रभावशीलता को सीधे प्रभावित करती है।

सिवनी के शहरी महाविद्यालय जैसे शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी शास. विधि महाविद्यालय सिवनी। स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी जैसे ग्रामीण महाविद्यालयों की तुलना में तेज इंटरनेट पहुँच और मजबूत डिजिटल संसाधन प्रदान करने में बेहतर हैं जहाँ धीमे या अविश्वसनीय इंटरनेट कनेक्शन और सीमित डिजिटल सुविधाओं की समस्या है। यह असमानता एक शैक्षिक विभाजन पैदा करती है जहाँ शहरी छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा शोध और शैक्षणिक संसाधनों तक आसान पहुँच मिलती है जबकि ग्रामीण छात्रों को इसके साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई होती है।

महाविद्यालय का नाम	**इंटरनेट एक्सेस (स्पीड)**	**वाई-फाई उपलब्धता**	**डिजिटल संसाधनों तक पहुंच**	**संकाय इंटरनेट उपयोग**	**छात्रों द्वारा इंटरनेट का उपयोग**	**कनेक्शन की विश्वसनीयता**	**ऑनलाइन शोध के लिए समर्थन**
शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी	उच्च गति (100 एमबीपीए)	हाँ	पूर्ण पहुँच (ई-पत्रिकाएँ डेटाबेस	व्यापक	उच्च	स्थिर और तेज़	हाँ

			ऑनलाइन संसाधन)				
शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी	मध्यम (50 एमबीपीए)	हाँ	सीमित पहुँच (मूलभूत संसाधन ई-पुस्तकें)	मध्यम	मध्यम	अधिकांशतः स्थिर कभी-कभी गिरावट	मध्यम
शास. विधि महाविद्यालय सिवनी	धीमा (10 एमबीपीए)	नहीं	बहुत सीमित (केवल भौतिक पुस्तकें)	कम	कम	अस्थिर लगातार गिरावट	कोई नहीं
डी.पी. चतुर्वेदी महाविद्यालय सिवनी	बहुत धीमा (5 एमबीपीए)	नहीं	भौतिक संसाधनों तक सीमित	न्यूनतम	न्यूनतम	बार-बार बिजली गुल होना	कोई नहीं
निर्मला देवी डिग्री महाविद्यालय जाम सिवनी	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	न्यूनतम डिजिटल पहुँच	कम	कम	बहुत अस्थिर	कोई नहीं

स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	सीमित पहुँच	मध्यम	मध्यम	अस्थिर लगातार गिरावट	कोई नहीं
शा. महाविद्यालय बरघाट जिला-सिवनी	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	बहुत सीमित (केवल भौतिक पुस्तकें)	न्यूनतम	मध्यम	अधिकांशतः स्थिर कभी-कभी गिरावट	कोई नहीं
शास. महाविद्यालय छपारा	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	न्यूनतम डिजिटल पहुँच		कम	बार-बार बिजली गुल होना	कोई नहीं
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी	बहुत धीमा (5 एमबीपीए)	हाँ	सीमित पहुँच	मध्यम	कम	अस्थिर लगातार गिरावट	कोई नहीं
शास. महाविद्यालय घंसौर	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	बहुत सीमित (केवल	कम	न्यूनतम	बहुत अस्थिर	कोई नहीं

			भौतिक पुस्तकें)				
शास. महाविद्यालय कुरई जिला-सिवनी	बहुत धीमा (5 एमबीपीए)	हाँ	न्यूनतम डिजिटल पहुँच	मध्यम	मध्यम	अधिकांशतः स्थिर कभी-कभी गिरावट	कोई नहीं
विवेकानन्द कन्या महाविद्यालय खुरसरा	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	सीमित पहुँच	कम	न्यूनतम	बहुत अस्थिर	कोई नहीं
महाजन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय अरंडिया	बहुत धीमा (5 एमबीपीए)	हाँ	सीमित पहुँच	मध्यम	मध्यम	अस्थिर लगातार गिरावट	कोई नहीं
आदर्श महाविद्यालय पलारी	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	बहुत सीमित (केवल भौतिक पुस्तकें)	न्यूनतम	कम	बार-बार बिजली गुल होना	कोई नहीं

अनुराग महाविद्यालय ऑफ एजुकेशन पलारी	बहुत धीमा (5 एमबीपीए)	हाँ	न्यूनतम डिजिटल पहुँच	मध्यम	न्यूनतम	अस्थिर लगातार गिरावट	कोई नहीं
महाकोशल विज्ञान महाविद्यालय छपारा	धीमा (3 एमबीपीए)	नहीं	सीमित पहुँच	न्यूनतम	मध्यम	बार-बार बिजली गुल होना	कोई नहीं

निष्कर्ष-

जिले के शहरी केंद्र में स्थित शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी अपने छात्रों और शिक्षकों को पूरे परिसर में हाई-स्पीड इंटरनेट (100 एमबीपीएस) और वाई-फाई कनेक्टिविटी की उत्कृष्ट सुविधा प्रदान करता है। यह कनेक्टिविटी छात्रों को हर समय ई-जर्नल्स डेटाबेस और ऑनलाइन शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है जिससे उनकी अध्ययन करने असाइनमेंट पूरा करने और स्वतंत्र रूप से सीखने की क्षमता बढ़ती है। शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी के शिक्षक इस हाई-स्पीड इंटरनेट का व्यापक रूप से पाठ्यक्रम विकास और छात्रों के साथ संचार के लिए उपयोग करते हैं। स्थिर और तेज इंटरनेट के साथ इस महाविद्यालय के छात्र डिजिटल शिक्षण वातावरण में सफल होने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। इसके अलावा यह महाविद्यालय ऑनलाइन अध्ययन को भी बढ़ावा देता है जिससे छात्रों

को सूचना और डेटा के वैश्विक भंडार तक पहुँच प्राप्त होती है जिससे उनके सीखने के अनुभव में और सुधार होता है।

दूसरी ओर शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी उचित इंटरनेट स्पीड (50 एमबीपीएस) प्रदान करते हुए केवल ई-पुस्तकों जैसे बुनियादी डिजिटल संसाधन ही उपलब्ध कराता है। वाई-फाई की उपलब्धता एक लाभ है लेकिन ई-जर्नल या शोध डेटाबेस जैसे व्यापक डिजिटल संसाधनों तक पहुँच सीमित है। परिणामस्वरूप शा. कन्या महाविद्यालय सिवनी की छात्राओं की डिजिटल संसाधनों तक पहुँच मध्यम है और हालाँकि इंटरनेट कनेक्शन अधिकांशतः स्थिर है फिर भी कभी-कभी कनेक्टिविटी की समस्याएँ आती हैं। संकाय सदस्य शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए इंटरनेट का मध्यम उपयोग करते हैं लेकिन डिजिटल संसाधनों पर निर्भरता शासकीय पी.जी. महाविद्यालय जितनी नहीं है। ऑनलाइन अध्ययन के लिए समर्थन कुछ हद तक मध्यम है क्योंकि छात्रों के लिए उन्नत शोध उपकरणों और डेटाबेस तक पहुँच पाना मुश्किल है।

स्वामी विवेकानन्द शा. महाविद्यालय लखनादौन जो एक ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है धीमी इंटरनेट स्पीड (10 एमबीपीएस) से जूझता है और परिसर में वाई-फाई की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। इससे छात्रों की ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच सीमित हो जाती है। डिजिटल संसाधनों तक सीमित पहुँच के कारण छात्र मुख्यतः भौतिक पुस्तकों पर निर्भर रहते हैं जो अक्सर पुरानी हो जाती हैं और गहन शोध के लिए अपर्याप्त होती हैं। इंटरनेट कनेक्शन अस्थिर है और बार-बार टूटता है जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए शोध करना या ऑनलाइन उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना मुश्किल हो जाता है। ऑनलाइन शोध के लिए समर्थन की कमी का मतलब है कि इस महाविद्यालय को अपने शिक्षण वातावरण को आधुनिक बनाने में भारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

शा. महाविद्यालय बरघाट में और भी गंभीर समस्याएँ हैं इंटरनेट की गति बहुत धीमी (5 एमबीपीएस) है और परिसर में वाई-फाई की सुविधा नहीं है। छात्रों के पास सीमित संसाधन हैं और

इंटरनेट की बार-बार रुकावटें ऑनलाइन पढ़ाई के किसी भी प्रयास को और जटिल बना देती हैं। शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा इंटरनेट संसाधनों का न्यूनतम उपयोग शहरी समकक्षों की तुलना में बरघाट महाविद्यालय द्वारा सामना किए जा रहे गंभीर तकनीकी अंतर को उजागर करता है। इसके अलावा ऑनलाइन शोध सहायता के बिना छात्र शैक्षणिक सामग्री से पूरी तरह जुड़ नहीं पाते हैं जिससे उन्हें शहरी महाविद्यालयों के छात्रों की तुलना में नुकसान होता है।

शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय केवलारी को बरघाट और लखनादौन महाविद्यालय जैसी ही चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जहाँ इंटरनेट की गति बहुत धीमी (3 एमबीपीएस) है और परिसर में वाई-फाई की सुविधा भी नहीं है। डिजिटल संसाधन न्यूनतम हैं और कनेक्शन बेहद अस्थिर है जिससे ऐसा माहौल बन रहा है जहाँ छात्रों और शिक्षकों को शिक्षण शोध और संचार के लिए ऑनलाइन उपकरणों का उपयोग करने में कठिनाई हो रही है। ऑनलाइन शोध के लिए समर्थन की कमी शहरी और ग्रामीण महाविद्यालयों के बीच शैक्षिक खाई को और बढ़ा रही है।

संदर्भ-

1. मधुसूदन एम. (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग।
2. मणि एम. शाहुल हमीद एस. थिरुमगल ए. और लाइब्रेरियन एटी आईसीटी ज्ञान पुस्तकालय अवसंरचना सुविधाओं का छात्रों के ई-संसाधनों के उपयोग पर प्रभावः एक अनुभवजन्य अध्ययन।
2. सिंह के. (पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के छात्रों में ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोगः एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन
3. पांडा एस. (स्कोपस डेटाबेस का उपयोग करके पुस्तकालयों में ई-संसाधनों के उपयोग का अनुसंधान प्रवृत्ति विश्लेषण। भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-संसाधन
4. मिश्रा एच.के. और ओझा आर. (आधुनिक शैक्षणिक पुस्तकालयों पर ई-संसाधनों का प्रभाव। रिसर्च स्पेक्ट्रा

5. आशा के.ए. (शैक्षणिक और शोध कार्यों में छात्रों के बीच ई-संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग पर अध्ययन। इंडियन रिसर्च जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन

❑❑❑